CEDSI
CENTRE OF EXCELLENCE FOR DAIRY SKILLS IN INDIA

CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

उत्तर प्रदेश को गांठदार त्वचा रोग के लिए एक करोड़ टीके मिलेंगे

उत्तर प्रदेश सरकार एक करोड़ वैक्सीन खुराक की उपलब्धता सुनिश्चित करके मवेशियों में गांठदार त्वचा रोग के प्रसार को सक्रिय रूप से संबोधित कर रही है। पशुपालन मंत्री धर्मपाल सिंह ने इस महत्वपूर्ण पहल में तेजी लाने के निर्देश जारी किये हैं. पशुपालन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव रजनीश दुबे ने अब तक 65 लाख वैक्सीन खुराक दिए जाने की पुष्टि की है.

इस बीमारी ने 40 जिलों में 8,825 मवेशियों को प्रभावित किया है, जबकि आज तक 59 जानवरों की मृत्यु दर अपेक्षाकृत कम है। मंत्री सिंह ने 3.5 लाख वैक्सीन खुराक के दैनिक प्रशासन लक्ष्य पर जोर दिया और प्रतिबंधित पशु मेलों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आग्रह किया। इसके अलावा, सिंह ने गोटपॉक्स वैक्सीन के वितरण की वकालत करते हुए पश्चिमी और मध्य उत्तर प्रदेश के 35 अप्रभावित जिलों में टीकाकरण के प्रयासों को बढ़ाने का आह्वान किया। वाराणसी में बीमारी की रोकथाम पर विशेष ध्यान दिया जाएगा

मंत्री ने पशुपालन और शहरी विकास विभागों के बीच बेहतर समन्वय का आग्रह करते हुए गौशाला क्षमता बढ़ाने और कृत्रिम गर्भाधान लक्ष्यों में तेजी लाने पर जोर दिया।

भारत सरकार ने अखिल भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान के लिए मसौदा प्रस्ताव शुरू किया

एक अभूतपूर्व कदम में, भारत सरकार ने पशु स्वास्थ्य, शिक्षा और अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करते हुए एम्स के समान अखिल भारतीय पशु चिकित्सा विज्ञान संस्थान (एआईआईवीएस) की स्थापना के लिए एक मसौदा प्रस्ताव तैयार किया है।

प्रस्तावित संस्थान में जानवरों के लिए व्यापक चिकित्सा देखभाल प्रदान करने वाला 200 से 500 सीटों वाला अत्याधुनिक अस्पताल शामिल होगा। प्रस्ताव में स्नातक और स्नातकोत्तर पशु चिकित्सकों के लिए आधुनिक निदान और शिक्षण सुविधाओं के साथ-साथ विद्वानों के लिए नवाचार और अनुसंधान इकाइयों की रूपरेखा तैयार की गई है। AIIVS का लक्ष्य 'एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण' का उपयोग करते हुए एक नीति अनुसंधान थिंक-टैंक और पशु महामारी तैयारियों के लिए उत्कृष्टता का केंद्र बनना है।

भारतीय पशु चिकित्सा परिषद (वीसीआई) द्वारा शुरू किया गया यह प्रस्ताव केंद्रीय मंत्रिमंडल की औपचारिक मंजूरी का इंतजार कर रहा है, जिससे देश भर में संभावित विस्तार का मार्ग प्रशस्त होगा।

एनडीआरआई का अध्ययन हल्दी-दूध के संयोजन को सही ठहराता है

एनडीआरआई के निदेशक डॉ. धीर सिंह ने कहा, "हल्दी या हल्दी दूध सर्दी और खांसी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक सदियों पुराना पारंपरिक घरेलू उपचार है। हमारे वैज्ञानिकों ने इस संयोजन के लाभ के वैज्ञानिक तंत्र का पता लगाया है। करक्यूमिन एक मजबूत एंटीऑक्सीडेंट है जो मुक्त कणों और प्रतिक्रियाशील ऑक्सीजन प्रजातियों के निर्माण को रोकता है, कोशिका झिल्ली और आनुवंशिक सामग्री को नुकसान पहुंचाता है, जो अंततः कैंसर का कारण बन सकता है।

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (एनडीआरआई) के वैज्ञानिकों ने नैनोवेसिकल्स के रूप में दूध में प्राकृतिक रूप से मौजूद एक्सोसोम की मदद से हल्दी के जैव-सक्रिय घटक करक्यूमिन के अवशोषण में सुधार करने के लिए एक विधि विकसित की है।

उन्होंने कहा, "करक्यूमिन पानी में अघुलनशील है और गर्म करने पर इसके लाभकारी तत्व क्षतिग्रस्त हो जाते हैं और शरीर तक नहीं पहुंच पाते हैं। लेकिन अब, सक्रिय घटक शरीर के लिए स्थिर और फायदेमंद हो सकते हैं। करक्यूमिन, अधिक हाइड्रोफोबिक अणु होने के कारण, आसानी से दूध के एक्सोसोम में प्रवेश कर सकता है। करक्यूमिन-एनकैप्सुलेटेड एक्सोसोम पाचन प्रक्रिया का विरोध करते हैं और करक्यूमिन को परिसंचरण में ले जाने के लिए आंतों की बाधा को पार कर सकते हैं।

डॉ. संगीता तूर को पंजाब के पशुपालन विभाग की पहली महिला निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया

एक ऐतिहासिक कदम में, पंजाब सरकार ने डॉ. संगीता तूर को पशुपालन विभाग का निदेशक नियुक्त किया है, जिससे वह विभाग के इतिहास में यह पद संभालने वाली पहली महिला बन गई हैं। डॉ. तूर, जो पहले योजना और विकास क्षेत्र में पशुपालन के संयुक्त निदेशक के रूप में कार्यरत थे, अब इस प्रतिष्ठित भूमिका को निभा रहे हैं, जो एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

आभार व्यक्त करते हुए डॉ. तूर ने उन्हें यह जिम्मेदारी सौंपने के लिए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान और पशुपालन मंत्री गुरमीत सिंह खुड्डियां को धन्यवाद दिया। उन्होंने चल रही परियोजनाओं को संबोधित करने और लुधियाना में पंजाब पशु चिकित्सा वैक्सीन संस्थान से संबंधित मुद्दों को प्राथमिकता से हल करने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया।

डॉ. तूर ने पशुधन और मुर्गीपालन में प्रचलित संक्रामक रोगों को नियंत्रित करने के लिए मजबूत वैक्सीन उत्पादन के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने पशु चिकित्सा निरीक्षकों और कर्मचारियों के रिक्त पदों को भरने और पशु अस्पतालों में गुणवत्तापूर्ण दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने जैसी महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं पर भी प्रकाश डाला।

पशुपालन विभाग का नेतृत्व करने वाली पहली महिला के रूप में, डॉ. तूर का लक्ष्य पशु चिकित्सकों, विशेष रूप से महिला चिकित्सकों को नवाचार में नेतृत्व करने और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित करना है। डेयरी फार्मिंग, पोल्ट्री फार्मिंग, बकरी पालन और अन्य क्षेत्रों में पंजाब की क्षमता को पहचानते हुए, वह किसानों को बेहतर पशु चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने का इरादा रखती हैं।

अमूल प्रमुख ने उपभोक्ताओं को आश्वस्त किया: समय पर मानसून के कारण दूध की कीमतें स्थिर होने की उम्मीद है

चूँकि डेयरी उद्योग इस समय अपने व्यस्ततम मौसम में है, जिसमें दूध का उत्पादन चरम पर है, उत्पादन में अधिशेष से उपभोक्ताओं के लिए स्थिर कीमतें बनाए रखने की उम्मीद है। फ़ीड और चारे पर समय पर मानसून के सकारात्मक प्रभाव, पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने और डेयरी उत्पादकों पर लागत का बोझ कम करने से इस स्थिति को और बल मिला है।

उपभोक्ताओं के लिए एक स्वागत योग्य घटनाक्रम में, प्रसिद्ध डेयरी ब्रांड अमूल के मूल संगठन, गुजरात सहकारी दूध विपणन महासंघ (जीसीएमएमएफ) के प्रबंध निदेशक जयेन एस मेहता ने कहा कि भारत में दूध की कीमतें स्थिर होने की संभावना है और इसमें और बढ़ोतरी नहीं हो सकती है। निकट भविष्य। मेहता ने इस सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए मानसून के समय पर आगमन को जिम्मेदार ठहराया, जिससे दूध की कीमतों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक, फ़ीड और चारे की लागत पर दबाव कम हो गया है।

चूँकि डेयरी उद्योग इस समय अपने व्यस्ततम मौसम में है, जिसमें दूध का उत्पादन चरम पर है, उत्पादन में अधिशेष से उपभोक्ताओं के लिए स्थिर कीमतें बनाए रखने की उम्मीद है। फ़ीड और चारे पर समय पर मानसून के सकारात्मक प्रभाव, पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने और डेयरी उत्पादकों पर लागत का बोझ कम करने से इस स्थिति को और बल मिला है।

डेयरी उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और कीमतों में किसी भी स्थिरीकरण का उपभोक्ताओं और उत्पादकों दोनों द्वारा स्वागत किया जाता है। नियंत्रित फ़ीड और चारे की लागत के मामले में समय पर मानसून द्वारा प्रदान की गई राहत एक सकारात्मक विकास है जिससे डेयरी क्षेत्र के हितधारकों को लाभ होने की संभावना है।

भारत के डेयरी क्षेत्र में बायोगैस ने गति पकड़ी, जिससे सतत ऊर्जा का मार्ग प्रशस्त हुआ

बायोगैस, जैविक कचरे से प्राप्त एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत, भारत में तेजी से लोकप्रियता हासिल कर रहा है, जो देश की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों के लिए एक आशाजनक समाधान पेश करता है। जैसे-जैसे भारत बढ़ती जनसंख्या और ऊर्जा की बढ़ती माँगों से जूझ रहा है, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा स्रोतों की तत्काल आवश्यकता स्पष्ट हो गई है। गेल के पूर्व निदेशक ईएस रंगनाथन ने 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के भारत के महत्वाकांक्षी लक्ष्य में बायोगैस की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला।

बायोगैस क्षेत्र में हाल के मील के पत्थर में रिलायंस इंडस्ट्रीज, अदानी समूह और इंडियन ऑयल जैसे प्रमुख खिलाड़ी सक्रिय रूप से संपीड़ित बायोगैस (सीबीजी) संयंत्रों की स्थापना में भाग ले रहे हैं। उनकी भागीदारी एक स्थायी और पर्यावरण-अनुकूल ऊर्जा भविष्य प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। भारत में बायोगैस बाजार विकास पथ पर है, जिसके 2022 में 1.47 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2029 में 2.25 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है, जो 2022-2029 की अनुमानित अवधि के भीतर 6.3% की उल्लेखनीय चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) को दर्शाता है। यह उछाल भारत के बायोगैस उद्योग के भीतर आशाजनक क्षमता को रेखांकित करता है, जो स्थायी ऊर्जा समाधानों के प्रति देश की प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

ईएस रंगनाथन ने 'दिल्ली मिल्क स्कीम बायोगैस प्लांट' जैसी प्रभावशाली परियोजनाओं के माध्यम से बायोगैस प्रौद्योगिकी के सफल कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला, जहां बायोगैस उत्पन्न करने के लिए डेयरी कचरे का कुशलतापूर्वक उपयोग किया गया था। इससे न केवल अपशिष्ट निपटान चुनौतियों का समाधान हुआ बल्कि डेयरी उद्योग के लिए ऊर्जा लागत में भी काफी कमी आई। कई सफल केस अध्ययनों के साथ, बायोगैस पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के साथ-साथ भारत की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए एक व्यवहार्य समाधान साबित हो रहा है।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने आर्थिक विकास के लिए पशुपालन को मजबूत करने की वकालत की

मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और राज्य की जीडीपी वृद्धि में योगदान देने के लिए पशुपालन को मजबूत करने और पशु धन बढ़ाने की क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने शहर के बाहरी इलाके उत्तनहल्ली में पशुपालन और पशु चिकित्सा सेवा विभाग द्वारा विभिन्न पहलों के उद्घाटन के दौरान इस पर जोर दिया।

सिद्धारमैया ने किसानों के लिए उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए स्थानीय पशुधन नस्लों के आनुवंशिक सुधार के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने डेयरी फार्मिंग को एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में देखा और कर्नाटक में उत्पादन और खरीद में वृद्धि की संभावना को स्वीकार किया, जो गुजरात के बाद देश में दूसरा सबसे बड़ा दूध उत्पादक है।

उद्घाटन किए गए कार्यक्रमों में से एक पशुधन उत्पादन के स्वास्थ्य और विस्तार के लिए मान्यता प्राप्त एजेंटों के लिए एक प्रशिक्षण पहल थी (ए-हेल्प), एक केंद्र सरकार की पहल जिसका उद्देश्य पशु सखी नामक एजेंटों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में मवेशियों और पशुधन देखभाल का विस्तार करना था। इसके अतिरिक्त, मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने खुरपका-मुंहपका बीमारी के खिलाफ मवेशियों के लिए राज्यव्यापी टीकाकरण अभियान के चौथे दौर की शुरुआत की और वरुणा निर्वाचन क्षेत्र के उत्तनहल्ली में एक पशु चिकित्सा इकाई का उद्घाटन किया।

खुरपका-मुंहपका और गांठदार त्वचा जैसी बीमारियों के प्रकोप को संबोधित करते हुए, मुख्यमंत्री ने दूध की पैदावार बनाए रखने के लिए मवेशियों को टीकाकरण या टीका लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से डेयरी फार्मिंग को द्वितीयक आर्थिक गतिविधि के रूप में मानने का आग्रह किया, खासकर दूध की प्रचुरता के समय में। सिद्धारमैया ने 1985 में पशुपालन मंत्री के रूप में अपने कार्यकाल को याद किया, दूध किसानों की सहकारी समितियों को मजबूत करने, आंदोलन को मजबूत करने और कर्नाटक मिल्क फेडरेशन (केएमएफ) के तहत डेयरियों को लाने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

सीईडीएसआई ने "सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस" पहल पर टाटा ट्रस्ट के साथ मिलकर क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया।

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई) ने टाटा ट्रस्ट द्वारा वित्त पोषित पहल, "सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस" से जुड़े प्रगतिशील किसानों और विस्तार कार्यकर्ताओं के लिए एक विशेष क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया है। उदयपुर में केवीके पर केंद्रित कार्यक्रम, बेहतर पशु प्रबंधन तकनीकों के बारे में ज्ञान प्रदान करने पर केंद्रित है। पशुधन प्रबंधन कौशल को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई यह पहल किसानों को सशक्त बनाने और ग्रामीण समुदायों को मजबूत करने के टाटा ट्रस्ट के मिशन के अनुरूप है। निरंतर सीखने और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देकर, यह कार्यक्रम कृषि क्षेत्र और डेयरी क्षेत्र के सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है।

कर्नाटक में डेयरी किसानों को सशक्त बनाने के लिए CEDSI ने रिलायंस फाउंडेशन के साथ साझेदारी की

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (सीईडीएसआई), रिलायंस फाउंडेशन के सहयोग से, गडग, कर्नाटक में तीन दिवसीय क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित कर रहा है। ये पहल डेयरी किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक हैं, जिसका लक्ष्य डेयरी किसानों और विस्तार श्रमिकों को लाभ पहुंचाना है। कार्यक्रम डेयरी फार्मिंग प्रथाओं को उन्नत करने और डेयरी उद्योग के भीतर स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। साझेदारी और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देकर, सीईडीएसआई और रिलायंस फाउंडेशन प्रतिभागियों को समृद्ध और टिकाऊ डेयरी फार्मिंग भविष्य के लिए आवश्यक उपकरणों से लैस करने का प्रयास करते हैं।

हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया (CEDSI)", किसानों की आजीविका के सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए, वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

CEDSI : रिविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया